उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षा 2025

अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

TOP 10

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

10 MARKS वाले प्रश्न

1. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की विशेषताएं बताइए । पूर्ण प्रतिस्पर्धा में एक फर्म कीमत स्वीकारक क्यों होती है ?

उत्तर: पूर्ण की विशेषताएं:-

1. **क्रेता और विक्रेता की अधिक संख्या** - इस बाजार में क्रेता और विक्रेता की संख्या अधिक होती है ।
2. **समरूप वस्तु** - इस बाजार में सभी विक्रेताओं के पास समरूप वस्तुएं होती है अर्थात वस्तुओं में किसी प्रकार का कोई भी अन्तर नहीं होता है ।
3. **बाजार को दशाओं का पूर्ण ज्ञान** - क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है ।
4. **कीमत का निर्धारण** - इस बाजार में वस्तुओं की कीमत का निर्धारण वस्तु की मांग और पूर्ति द्वारा बाजार में होता है ।
5. **बजार में प्रवेश एवं निकासी** - इस बाजार में कोई भी नया विक्रेता प्रवेश कर सकता है तथा कोई भी उद्योग को छोड़ सकता है ।

6. **विक्रय लागत** - इस बाजार में विक्रय लागत शुन्य होती है, क्योंकि सभी को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है इसलिए किसी प्रकार के विज्ञापन की आवश्यकता नही होत्ती है ।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा में एक फर्म कीमत स्वीकारक होती है :-

पूर्ण प्रतियोगिता में असंख्य क्रेता और विक्रेता मौजूद होते है । इस कारण किसी एक क्रेता या विक्रेता से बाजार को कोई प्रभाव नही पड़ता है । वस्तु की कीमत का निर्धारण बाजार में वस्तु की मांग और पूर्ति के आधार पर होती है। और इस कीमत को कोई व्यक्तिगत फर्म प्रभावित नहीं कर सकता है। अत: प्रत्येक फर्म को बाजार द्वारा निर्धारित कीमत को स्वीकार करना होता है ।

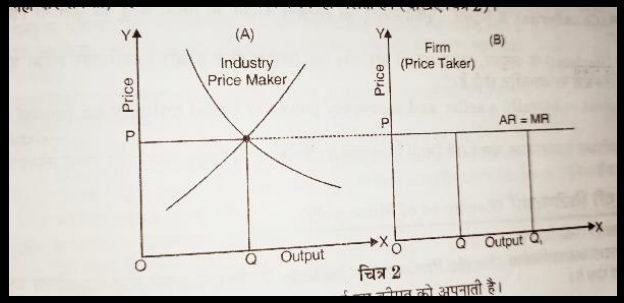

चित्र 2

2.केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के भेद को स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर : केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के

भेद:-

बाजार अर्थव्यवस्था	केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था
बाजार अर्थव्यवस्था एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था है और केंद्रीय समस्याओं का समाधान कीमत तंत्र द्वारा होता है ।	केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था सरकारी नियंत्रण वाली अर्थव्यवस्था है। केंद्रीय समस्याओं का संधान सरकारी आदेश से होता है ।
संपत्ति पर निजी स्वामित्व का अधिकार तथा संपत्ति की कोई सीमा नहीं होती है ।	संपत्ति के स्वामित्व पर उच्चतम सीमा लागू की जा सकती है तथा

	निजी स्वामित्व सरकार की देखभाल में होता है ।
उत्पादन की प्रक्रिया में सरकार की प्रत्यक्ष सहभागिता नहीं होती है ।	उत्पादन की प्रक्रिया में सरकार की प्रत्यक्ष सहभागिता होती है ।
उत्पादन प्रकिया का मुख्य उद्देश्य लाभ अधिकतम करना है ।	उत्पादन प्रकिया का मुख्य उद्देश्य सामाजिक कल्याण को अधिकतम करना है ।
अर्थव्यवस्था का विकास बाजार शक्तियों पर निर्भर करता है ।	अर्थव्यवस्था का विकास योजनावद्ध कार्यक्रमों के अनुरूप होता है ।
विभिन्न निजी फर्मों के बीच गला काट प्रतियोगिता होती है।	इसमें प्रतियोगिता जैसी कोई चीज नहीं होती है ।

3.आय और उत्पादन पर समग्र मांग में परिवर्तन के प्रभाव की व्याख्या कीजिये ।

उत्तर:- समग्र मांग में परिवर्तन का आय तथा उत्पादन पर प्रभाव - आय का संतुलन स्तर समग्र मांग पर निर्भर करता है । अत: यह समग्र मांग में परिवर्तन होता है, तो आय का संतुलित स्तर भी परिवर्तित होता है । यह निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक परिस्थितियों में हो सकता है-

1. **उपभोग में परिवर्तन** - यह स्वायत्त उपभोग ($\bar{C}$) में परिवर्तन या उपभोग (C) में परिवर्तन के कारण हो सकता है ।
2. **निवेश में परिवर्तन** - निवेश स्वतंत्र है । यद्धपि इसका अर्थ केवल इतना है कि यह आय के स्तर पर निर्भर नहीं करता । आय के अतिरिक्त भी ऐसे बहुत से चर है, जो निवेश स्तर को प्रभावित कर सकते है ।

उदाहरण की सहायता से, निवेश में परिवर्तन को ज्ञात किया जा सकता है -

मान लीजिये, **C = 40 + 0.8Y, I = 10**

इस स्थिति में, संतुलित आय (समीकरण से) 250 होगी-

Y = C + I = 40 +0.8Y + 10, ताकि Y = 1/ 1-0.8 ×50 = 250

अब, मान लीजिये की निवेश बढ़कर 20 हो जाता है । ऐसा करने पर नई संतुलित आय 300 होगी । इसे ग्राफ में भी देखा जा सकता है । आय में यह वृद्धि निवेश में वृद्धि के कारण होती है, जोकि यहाँ स्वतन्त्र व्यय का एक अवयव है ।

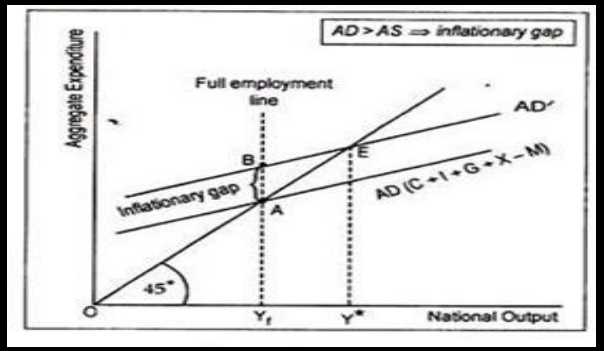

4. अनाधिमान वक्र की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: एक उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में तब होता है जब अपनी सीमित आय की सहायता से वस्तुओं की उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने में सफल हो जाता है। उपभोक्ता को कीमत रेखा उसकी आय एवं उपभोग वस्तुओं की कीमतों से निर्धारित होती है। इस कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊंचे से ऊंचे उदासीनता वक्र तक पहुंचने का प्रयास करता है।

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के संतुलन की दो शर्ते है -

i) **<u>उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करें</u> :-**

अर्थात मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए प्रतिस्थापन दर X तथा Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए।

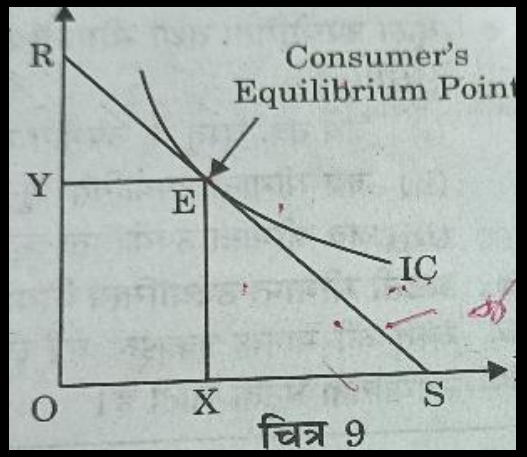

चित्र 9

ii) स्थायी संतुलन के लिए संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदार होनी चाहिए। अर्थात संतुलन बिंदू पर MRS घटती हुई होनी चाहिए।

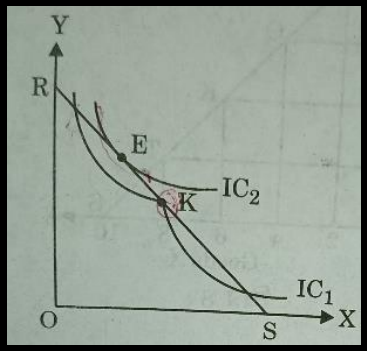

5.राष्ट्रीय आय क्या है? राष्ट्रीय आय की बुनियादी अवधारणाओं को समझाए।

उत्तर: एक देश की घरेलू सीमा में रहने वाले सभी सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित सभी साधन आयों तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय के योग को राष्ट्रीय आय कहते है।

राष्ट्रीय आय की बुनियादी अवधारणाएं:-

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDPmp): एक देश को घरेलू सीमा में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते है।

बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNPmp): एक अर्थव्यवस्था में एक लेखवर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग से है जिसमे विदेशों से प्राप्त अर्जित आय सम्मिलित रहती है।

GNPmp= GDPmp + NFIA

बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNPmp): बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्य ह्रास घटाने पर प्राप्त राशि को बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

NNPmp= GNPmp - मूल्य ह्रास

बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDPmp): बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्य ह्रास घटाने पर बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

NDPmp = GDPmp - मूल्य ह्रास

साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDPfc): किसी देश को घरेलू सीमा में सभी उत्पादकों द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादन के विभिन्न साधनों से प्राप्त आय (साधन आय) के योग को साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद कहते है।

NDPfc = NDPmp - अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDPfc): साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में मूल्य ह्रास जोड़ने पर साधन एलजी पर सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

GDPfc = NDPfc + मूल्य ह्रास

साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNPfc): किसी देश के घरेलू आय (NDPfc) में मूल्य ह्रास तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ने से साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

GNPfc = NDPfc + मूल्य ह्रास + NFIA

साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (राष्ट्रीय आय): देश के घरेलू आय तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय के योग को राष्ट्रीय आय कहते है।

NNPfc = NDPfc+ NFIA

6.भुगतान संतुलन को हल करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए है?

उत्तर: भुगतान संतुलन का संबंध किसी देश के शेष विश्व के साथ हुए सभी आर्थिक लेन देन के लेखांकन के रिकॉर्ड से है। इसके अंतर्गत सभी प्रकार के दृश्य, अदृश्य वस्तुओं के आयात निर्यात, एकपक्षीय अंतरण, सरकारी - गैर सरकारी सौदे, विदेशी निवेश आदि शामिल होते है।

संतुलन को हल करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए प्रमुख कदम:-

चालू खाते में रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता: नई व्यवस्था के अन्तर्गत, निर्यातकर्त्ता अपने विदेशी विनिमय अर्जन का 60 प्रतिशत भाग प्राधिकृत विदेशी विनिमय व्यापारियों को खुले व्यापार बाजार दरों पर बेच सकते हैं जबकि 40 प्रतिशत बिक्री भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निश्चित विनिमय दरों पर करना अनिवार्य था।

स्वर्ण आयात नीति का उदारीकरण: जनवरी, 1999 से, विशेषीकृत सीमा के अन्तर्गत लाये गये आयात किये गये सोने पर आरम्भ में आयात शुल्क को विदेशी विनिमय में,

400 रुपये प्रति दस ग्राम की दर को, 2001-02 के केन्द्रीय बजट में 250 रुपये प्रति 10 ग्राम तक कम कर दिया गया ।

निर्यात संवर्धन पूंजी वस्तुओं की योजना: नई निर्यात- आयात नीति के अन्तर्गत (1997-2002) वस्तुओं और सेवाओं के निर्यातकर्ता केवल 10 प्रतिशत आयात शुल्क देकर पूंजी वस्तुएँ आयात कर सकते हैं ।

निर्यात प्रवृतिक इकाइयां, निर्यात संसाधन क्षेत्र और विशेष आर्थिक क्षेत्र योजनाएं : सरकार ने निर्यात प्रवृतिक इकाइयों तथा निर्यात संसाधन क्षेत्रों के लिये योजना को उदार बना दिया है । कृषि, बागबानी, मुर्गी पालन, मत्स्य क्षेत्र, दुग्ध क्षेत्र को निर्यात इकाइयों में सम्मिलित कर लिया है । निर्यात संसाधन क्षेत्र इकाइयों को व्यापार और स्टार व्यापार घरों द्वारा निर्यात करने की आज्ञा दे दी गई है तथा पट्टे पर साज-सामान ले सकते हैं । इन इकाइयों को विदेशी इक्यूटिज में शत-प्रतिशत भाग लेने की आज्ञा दे दी गई है ।

7. प्रतियोगिता के आधार पर बाजार के वर्गीकरण की विवेचना कीजिए।

उत्तर: बाजार का अर्थ :- अर्थशास्त्र में बाज़ार वह सम्पूर्ण क्षेत्र होता है जिसमें क्रेता व विक्रेता किसी वस्तु विशेष के क्रय-विक्रय हेतु निकट संपर्क में होते हैं।

1) पूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार: -

जब बाज़ार में किसी वस्तु के क्रय-विक्रय के लिए क्रेताओं व विक्रेताओं के बीच पूर्ण प्रतियोगिता पायी जाती है। तो उस बाज़ार को पूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार अथवा पूर्ण बाज़ार कहा जाता है। इस तरह के बाज़ार में क्रेताओं-विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है जहाँ इन क्रेताओं और विक्रेताओं को बाज़ार का पूर्ण ज्ञान होता है।

2) अपूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार: -

जब किसी बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता का अभाव पाया जाता है। तब वह बाज़ार अपूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार अथवा अपूर्ण बाज़ार कहलाता है। इस बाज़ार में क्रेताओं व विक्रेताओं की संख्या कम होती है। जिस कारण उन्हें बाज़ार का पूर्ण ज्ञान नहीं होता। जिसका परिणाम यह होता है कि बाज़ार में प्रमुख रूप से वस्तु-विभेद पाया पाया जाता है।

(3) एकाधिकार (Monopoly):-

एकाधिकारी बाज़ार, बाज़ार की उस दशा को कहते हैं जिसमें एकाधिकारी किसी वस्तु विशेष का स्वयं अकेला उत्पादक होता है। साथ ही उस वस्तु विशेष की निकटतम स्थानापन्न वस्तु का भी कोई उत्पादक नहीं होता है इस प्रकार वस्तु की पूर्ति पर उसका पूर्ण नियंत्रण होता है।

इसमें प्रतियोगिता का अभाव होता है। अतः एकाधिकारी अपनी वस्तु की क़ीमत अलग-अलग व्यक्तियों से, अलग अलग स्थानों पर अलग अलग वसूल कर सकता है। इस तरह एकाधिकारी का, अपनी वस्तु की पूर्ति तथा क़ीमत पर पूर्ण नियंत्रण होता है।

8. फ्लक्स की प्रतिशत अथवा अनुपातिक विधि को समझाइए।

उत्तर: प्रतिशत रीति का प्रतिपादन प्रो. फ्लक्स ने किया । मांग की लोच का अनुमान लगाने के लिए मांग में होने वाले आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से भाग दिया जाता है।

$$\text{मांग की कीमत लोच} = \frac{\text{वस्तु की मांग में होने वाला प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में होने वाला प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$E_d = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

उदाहरण: एक वस्तु की कीमत 15% गिर जाने से उसकी मांग 1000 इकाइयों से 1200 इकाइयां हो जाती है। मांग की लोच ज्ञात कीजिये।

9. औसत और सीमांत लागत के संबंध रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: औसत लागत (AC) एवं सीमांत लागत (MC) में संबंध

- औसत लागत (AC) एवं सीमांत लागत (MC) दोनों की गणना कुल लागत (TC) द्वारा की जाती है।

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

$$MC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q}$$

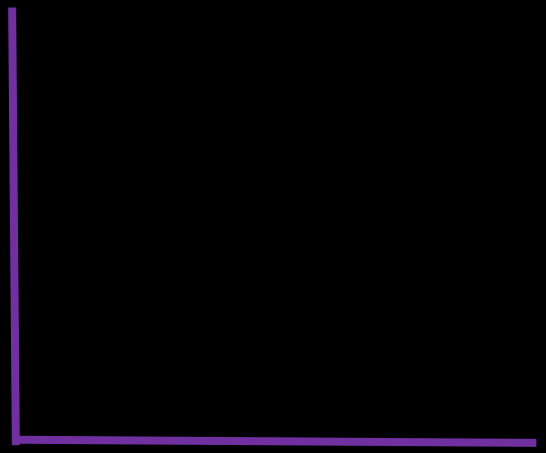

- जब औसत लागत VAKRA गिरता है, तब सीमांत लागत वक्र एक सीमा तक गिरता है, किंतु एक अवस्था के बाद सीमांत लागत भाग बढ़ना आरंभ हो जाता है। (MC < AC)
- जब औसत लागत न्यूनतम होती है, तब सीमांत लागत वक्र औसत वक्र को नीचे से काटता है। अर्थात न्यूनतम औसत लागत सीमांत लागत के बराबर होती है। (MC = AC)

- जब औसत लागत बढ़ता है तो सीमांत लागत वक्र औसत लागत से ऊपर होते है एवं साथ ही साथ औसत लागत से तीव्र गति से बढ़ता है। (MC > AC)

10. आय में परिवर्तन के कारण एक वस्तु की मांग पर पड़ने वाले प्रभाव समझाइए।

उत्तर: आय मांग का अर्थ उपभोक्ता की आय और वस्तु की मांगे जाने वाली मात्रा के बीच का संबंध होता है, जबकि अन्य कारक स्थिर रहते हैं।

आय मांग का अर्थ वस्तुओं एवं सेवाओं की उन मात्राओं से लगाया जाता है जो अन्य बातों के समान रहने की दशा में उपभोक्ता दी गयी समय अवधि में अपने आय के विभिन्न स्तरों पर खरीदने की क्षमता रखता है।

आय के आधार पर वस्तुओं को दो वर्गों में बांटा जाता है।

- श्रेष्ठ अथवा सामान्य वस्तुएँ
- घटिया वस्तुएँ

सामान्य वस्तुए (Normal Goods): सामान्य वस्तुओं के संबंध में आय मांग धनात्मक ढालवाला होता है अर्थात उपभोक्ता की आय और वस्तुओं के बीच में धनात्मक संबंध पाया जाता है।

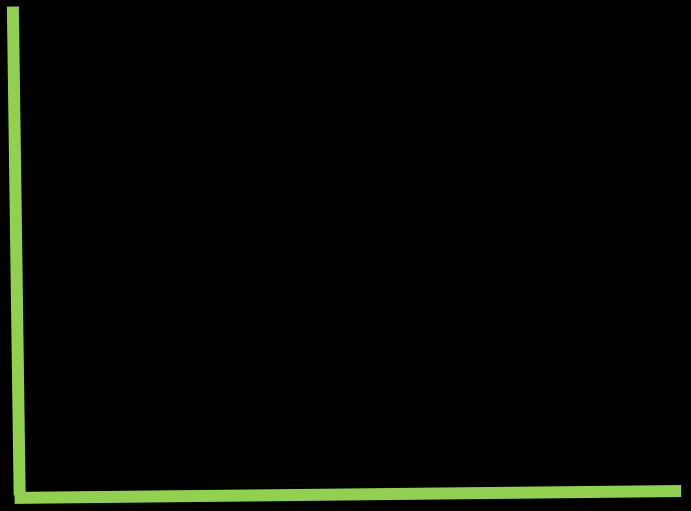

घटिया वस्तुएँ (Inferior Goods) ऐसी वस्तुएँ जिन्हें उपभोक्ता निम्न दृष्टि से देखता है और आय के साथ गुणात्मक संबंध पाया जाता है। उन्हें वस्तुएं कहते हैं।

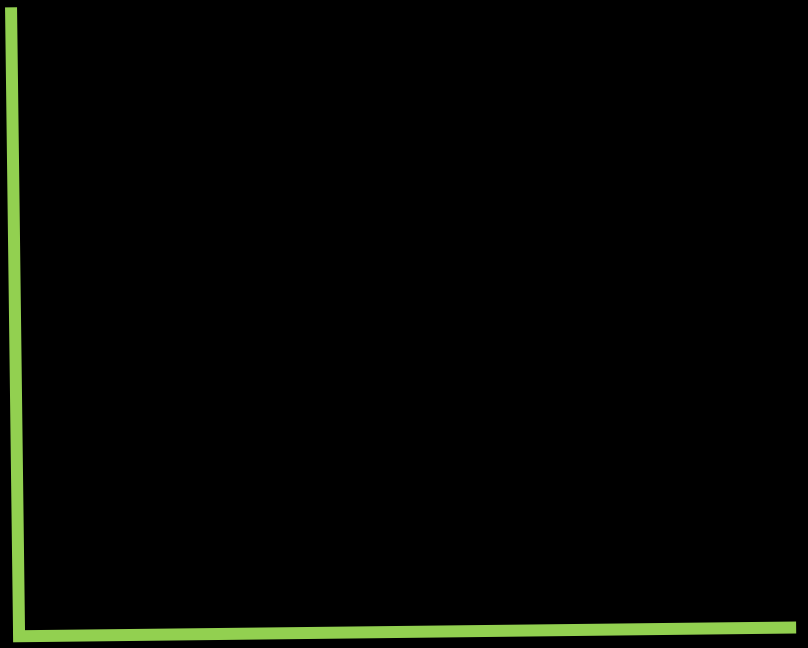

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com